

## परिशिष्टम् - ४

## तुलनात्मक - उणादिसूत्रसूची

उणादिप्रक्रियायाः समाप्तौ महोपाध्यायविनयसागरेण भगवतः पाणिनेः सन्मानपूर्वकं श्री पाणिनीयाशयमिति नामोल्लेखं कृत्वा तृतीयायां वृत्त्यां कतिचित् प्रयोगाः साधिताः इति सगौरवं प्रस्थापितम् । तदत्र महोपाध्यायविनयसागरेण संगृहीतानां उणादिसूत्राणां तालिका पुरःस्थाप्यते । -

| पाणिनीय उणादिसूत्राणि                                                         | भोजव्याकरणे उणादिसूत्राणि-                   |
|-------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------|
| १. कर्तरि कृत् (३, ४.६७)                                                      | कृत् कर्तरि च (३, १.१)                       |
| २. ण्वुल् तृचौ (३, १.१३३)                                                     | तृवृणौ (३, १.२)                              |
| ३. कर्तरि कृत् (३, ४.६७)                                                      | कृतः (३, १.३)                                |
| ४. युवोरनाकौ (७, १.१)                                                         | युवोरनाकौ (३, १.४)                           |
| ५. इगुपधज्ञाप्र्रीकिरः कः (३, १.१३५)                                          | नाम्युपधात् कः (३, १.६)<br>जानतेश्च (३, १.८) |
| ६. गिलेऽगिलस्य (वा. २७७)                                                      | गिलेपरेऽगिलस्य (३, १.९)                      |
| ७. नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः (३, १.१३४)                                 | पचिनन्दिग्रहादेर्युणिनिः (३, १.१०)           |
| ८. चरिचलिपतिवदीनां वा द्वित्वमच्याक्त्वा-<br>भ्यासस्येति वक्तव्यम् । (वा ६६२) | चरिचलिपतिहनिवदीनां वा द्विः<br>(३, १.११)     |
| ९. हन्तेर्घत्वं च (वा ६६७)                                                    | हन्तेर्घनश्च (३, १.१२)                       |
| १०. पाघ्राध्माधेट्दृशः शः (३, १.१३७)                                          | दृशादेः शः (३, १.१७)                         |
| ११. कर्तरि शप् (३, १.६८)                                                      | शिति चतुर्वत् (३, १.१८)                      |
| १२. तङ्शित्सार्वधातुकम् (३, ४.११३)<br>एतयोः गमकम्                             |                                              |
| १३. ज्वलतिकसन्तेभ्यो णः (३, १.१४०)                                            | ज्वलादेर्णः (३, १.१९)                        |
| १४. कर्मण्यन् (३, १.१०)                                                       | कार्येऽण् (३, १.२०)                          |
| १५. शुचेर्दश्च (३, १.८६)                                                      | शुचः शूर्दे (३, १.२२)                        |
| १६. सुपिस्थः (३, २.४)                                                         | नाम्नि च (३, १.२१)                           |
| १७. उरसो लोपश्च (वा. ६९२)                                                     | उरसः सलोपो मुम् वा (३, १.२३)                 |

१८. डे च विहायसो विहादेशो वक्तव्यः (वा. ६९५) विहायसो विहश्च (३, १.२४)
१९. खच्च डिद्धा (वा ६९०) भुजस्य च गमौ (३, १.२५)
२०. वयसि च (३, २.१०) अटौ (३, १.२६)
२१. स्तम्बशकृतोरिन् (३, २.२४) —
२२. फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च (३, २.२६) — इखखि (३, १.२७)
२३. सर्वकुलाभ्रकरीषेषुकषः (३, २.४२) —
२४. अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम् (६, ३.६७) खिति पदस्य (३, १.२८)
२५. एजेः खश् (३, २.२८) एजां खश् (३, १.२९)
२६. खित्यनव्ययस्य (६, ३.६६) खशन्ते पूर्वपदस्य ह्रस्वः (३, १.३०)
२७. भजोण्विः (३, २.६२) भजां विण् (३, १.४१)
२८. वेरपृक्तस्य (६, १.६७) वेः (३, १.४२)
२९. आट्यसुभगस्थूलपलितनग्रान्धप्रियेषु - आट्यसुभगस्थूलपलितनग्रान्धप्रियेषु  
च्यर्थेष्वचौ कृजः करणे ख्युन् (३, २.५६) कृजः (३, १.३३)
- ख्युट् करणे (३, १.३१)  
— अभूत तद्भावे (३, १.३२)
३०. कुभ्वस्तियोगेसम्पद्यकर्तरि च च्विः (५, ४.५०) अभूततद्भावे कृभ्वस्तियोगे नाम्नाश्विः  
(३, १.४६)
३१. च्वौ च (७, ४.२६) च्वौ दीर्घ ई चास्य (३, १.४८)
३२. अस्य च्वौ (७, २.३२) च्वौ सलोपश्च (३, १.४९)
३३. अव्यक्तानुकरणाद् द्वयजवरादधि - डाच् क्वचित् (३, १.५०)  
नितौ डाच् (५, ४.५७)
३४. आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च (३, २.७४) — आतोमनिप्क्वनिप्वनिपः (३, १.५१)  
— स्थामी (३, १.५२)
३५. विड्वनोरनुनासिकस्याऽऽत् (६, ४.४१) वनिपि जमस्यात्वम् (३, १.५६)
३६. ह्रस्वस्य पितिकृति तुक् (६, १.७१) ह्रस्वस्य पितिकृति तुक् (३, १.५५)
३७. क्विप् च (३, २.७६) क्विप् (३, १.५८)
३८. वनोर च (४, १.७) ईपि वनो रः (३, १.५७)
३९. क्विब्वचिप्रच्छयायतस्तुकटपुञ्जु श्रीणां दीर्घोऽसम्प्रसारणम् पचिप्रच्छयायतस्तुकटपुञ्जुश्रीणां  
दीर्घ च (३, १.५९)

|                                                                                        |                                         |
|----------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------|
| ४०. ध्यायतेः सम्प्रसारणं वा (वा. ७२९)                                                  | ध्यायतेः (३, १.६४)                      |
| ४१. द्युतिगमिजुहोतीनां द्वे च (वा. ७२६)                                                | द्युतिगमिजुहोतीनां द्वित्वं च (३, १.६५) |
| ४२. त्यदादिषुदृशोऽनालोचने कञ्च (३, २.६०)                                               | दृशेष्टक्ससौ चोपमाने कार्ये (३, १.६७)   |
| ४३. इदं किमोरीशकी (६, ३.९०)                                                            | किमिदमः कीशीशौ (३, १.६९)                |
| ४४. आ सर्वनाम्नः (६, ३.९१)                                                             | आ सर्वादेः (३, १.६८)                    |
| ४५. अदसोऽसेर्दादुदोमः (८, २.८०)                                                        | अदसोऽम् (३, १.७०)                       |
| ४६. करणे यजः (३, २.८५)                                                                 | णिनिरतीते (३, १.७२)                     |
| ४७. सुप्यजातौणिनिताच्छिल्ये (८, २.८६)                                                  |                                         |
| ४८. यजेश्च करणे (२, ३.६३)                                                              | करणे यजेः (३, १.७३)                     |
| ४९. कर्मणि हनः (३, १.८६)                                                               | हन्तेर्निन्दायाम् (३, १.७४)             |
| काशिकायां कुत्सितग्रहणं कर्तव्यमित्यस्य ज्ञापको<br>शब्दो निन्दायामिति सारस्वत सूत्रे - |                                         |
| ५०. ब्रह्मभृणवृत्रेषु क्निप् (३, २.८७)                                                 | क्निप् क्निब्डाः (३, १.७६)              |
| ५१. दृशेः क्निप् (३, २.७४)                                                             |                                         |
| ५२. सप्तम्यो जनेर्दः (उ. ९७)                                                           |                                         |
| ५३. क्तकवतू निष्ठा (१, २.२६)                                                           | क्तकवतू (३, २.१)                        |
| ५४. गत्यर्थाकर्मकाशिलषशीङ्स्थासवसजन-<br>रुहजीर्यतिभ्यश्च (३, २.७२)                     | गत्यर्थाकर्मकाच्च कर्तरि क्तः (३, २.२)  |
| ५५. अनुनासिकस्य क्निष्णलोः क्किति (३, ४.१५)                                            | अमान्तस्य किति झसे दीर्घः (३, २.३)      |
| ५६. उदुपधात् भावादि कर्मणोः (१, २.२१)                                                  | क्तो वा सेट् (३, २.८)                   |
| ५७. जीत- क्तः (३, २.१८७)                                                               | जीतां तक् वर्तमानेऽपि (३, २.१४)         |
| ५८. विभाषा भावादि कर्मणोः (३, २.१७)                                                    | आदीदितः (३, २.१३)                       |
| ५९. -                                                                                  | दस्तस्य नो दश्च (३, २.१५)               |
| ६०. अदोजग्धिर्त्यसि किति (२, ४.३६)                                                     | अदो जघुः (३, २.२१)                      |
| ६१. ल्वादिभ्यः (३, २.४४)                                                               |                                         |
| ६२. ओदितश्च (८, २.४५)                                                                  | रः (३, २.७)                             |
| ६३. रदाभ्यां निष्ठातोः पूर्वस्य च दः (८, २.४२)                                         |                                         |
| ६४. ल्वादिभ्यः (३, २.४४)                                                               | ल्वाद्योदितः (३, २.२२)                  |
| ६५. ओदितश्च (८, २.४५)                                                                  |                                         |

|                                                    |                                                       |
|----------------------------------------------------|-------------------------------------------------------|
| ६६. प्यायः पी (६, १.२८)                            | प्यायः पी (३, २.२४)                                   |
| ६७. श्विदितो निष्ठायाम् (७, २.१४)                  | त्राणाद्यावा (३, २.२७)                                |
| ६८. दो दद्धोः (७, २.४६)                            | दो दत्ति (३, २.२८)                                    |
| ६९. दस्ति (६, २.२४)                                |                                                       |
| ७०. ओदितश्च (७, २.१६)                              |                                                       |
| ७१. नुदविदोन्दत्राघ्राहीभ्योऽन्यतरस्याम् (८, २.५६) | स्वरात् तो वाः (३, २.२९)                              |
| ७२. श्विदितो निष्ठायाम् (७, २.१४)                  |                                                       |
| ७३. वसति क्षुधोरिट् (७, २.५२)                      | वसिक्षुधोरिट् (३, २.६)                                |
| ७४. ज्ञाजनो र्जा (३, १.७९)                         | जनेर्जा (३, २.३७)                                     |
| ७५. पचो वः (८, २.५२)                               | पचो वः (३, ३.३९)                                      |
| ७६. स्फायः स्फी (६, २.२२)                          | स्फायः स्फी (३, २.४२)                                 |
| ७७. शुषः कः (८, २.५१)                              | शुषेः कः (३, २.४५)                                    |
| ७८. लिटः कानज्वा (३, २.१०६)                        | क्रसुकानौ णबेवत् (३, ३.१)                             |
| ७९. वस्वेकाजाधधवसाम् (७, २.६७)                     | कृतद्वित्वानामेस्वराणामादन्तानां च<br>(३, ३.३)        |
| ८०. विभाषा गमहनविदविशाम् (७, २.६८)                 | गम्हन्विद्विश्दृशां क्रसो -वा (३, ३.४)                |
| ८१. लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे<br>(३, २.१२४)   | शतृशानौ तिप्तेवत् क्रियायाम् (३, ३.७)                 |
| ८२. आने मुक् (७, २.६२)                             | मुगानेऽतः (३, ३.९)                                    |
| ८३. ईदासः (७, २.८३)                                | आसेरान ई (३, ३.११)                                    |
| ८४. लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे<br>(३, २.१२४)   | आप्ययोरान्नित्यम् (३, ३.१२)                           |
| ८५. -                                              | न द्विरुक्तानां जक्षादीनां नपुंसके शौ वा<br>(३, ३.१३) |
| ८६. विदेः शतुर्वसुः (७, १.३६)                      | विदेर्वासुः (३, ३.१५)                                 |
| ८७. -                                              | अत्रभवत्तत्रभवतौ पूज्ये (३, ३.१७)                     |
| ८८. तृन्                                           | शीले तृन् (३, ४.१)                                    |

८९. अलंकृञ् निराकृञ् प्रजनोत्पचोन्मद रुच्य  
पत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच् (३, ३.१३६)
९०. लाजिस्थश्च ग्स्नुः (३, २.१३९)
९१. भुवश्च (३, २.१३८)
९२. जल्पभिक्षकुट्टुण्टवृडः षाकन् (३, २.१५५)
९३. सनाशंसभिक्ष उः (३, २.१६८)
९४. नमिकम्पिरम्यजसकहिसदीपो रः (३, २.१६७)
९५. सृघरपदः क्मरच् (३, २.१६०)
९६. विदिभिदिच्छिदेः कुरच् (३, २.१६२)
९७. भञ्जसमिदो घुरच् (३, २.१६१)
९८. चजोः कुः धिण्यतोः (७, ३.५२)
९९. यजजपदशां यङः (३, २.१६६)
१००. जागरुकः (३, २.१६५)
१०१. इण्णश्च जिसर्तिभ्य क्कुरप् (३, २.१६३)
१०२. भियः क्कुक्लुकनौ (३, २.१७४)
१०३. शृवन्द्योरारुः (३, २.१७३)
१०४. स्थेशभासपिसकसोवरच् (३, २.१७५)
१०५. आट्टगमहनजनः किकिनौ लिट् च (३, १.१७१)
१०६. उणादयो बहुलम् (३, ३.१)
१०७. कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण् (३.१)
१०८. कमिमनिजनिगाभायाहिभ्यश्च (उ. ७२)
१०९. अवतेष्टिलोपश्च (उ. १२९) ओम्
११०. बृहेर्नोच्च (उ. ५८५)
१११. सातिभ्यां मनिम्मनिणौ (उ. ५९२)
११२. अशिपणाप्यो रुडायलुकौ च (उ. ५७२)
- जिम्बोर्न (३, ४.६)
- षाकोकणः (३, ४.९)
- सान्ताशंसभिक्ष उः (३, ४.११)
- नमोदे रः (३, ४.१७)
- घसादेः क्मरः (३, ४.१८)
- भिदिच्छिदिविदिभ्यः कुरङ् (कुरच्)  
(३, ४.१९)
- भासादेर्घुरः (३, ४.२०)
- चजोः कगौघिति (३, ४.२१)
- यङ उकः (३, ४.२२)
- जागर्तेश्च (३, ४.२३)
- इण्णश्च जिसृगमिभ्यः क्कुरप् (३, ४.२४)
- भियः क्कुकौ (३, ४.२६)
- शृवन्द्योरारुः (३, ४.१४)
- स्थेशभासपिसकसो वरः (३, ४.२८)
- आट्टतः किर्द्धिश्च भूते (३, ४.२९)
- सदोणादयः (३, ५.१)
- कृवापाजिमिस्वादि-अशृङ्भ्य उण्  
(३, ५.२)
- सितनिगमिमिसिचिअविहिधाकुशभ्य  
स्तुन् (३, ५.३)
- अवतेर्मुक् (३, ५.४)
- अतिबृंहिभ्यां मनिण् (३, ५.५)
- मन्युपधाया ऋ रः (३, ५.६)

|                                                                   |  |                                                                                                  |
|-------------------------------------------------------------------|--|--------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ११३. अतिस्तुषुहुसृधृक्षिक्षुभायावापदीयक्षि<br>नीभ्यो मन् (उ. १३७) |  | धृ धृपदो मः (३, ५.७)                                                                             |
| ११४. धर्मः (उ. १४६)<br>(आवश्यक पदग्रहणम्)                         |  |                                                                                                  |
| ११५. अतिस्तुषुहुसृधृक्षिक्षुभायावापदीपक्षि<br>नीभ्यो मन् (उ. १३७) |  | ऋस्तुसुहुसृधृक्षिक्षुभामाया वा जक्षरैनी<br>शयैङ् पदभ्यो मः (३, ५.८)<br>(पदि धातोः द्विर्ग्रहणम्) |
| ११६. इषियुधिइन्धिदशिश्याधूसूभ्यो मक् (उ. १४२)                     |  | भीध्वोर्मक् (३, ५.९)                                                                             |
| ११७. भियः षुग्वा (उ. १४५)                                         |  |                                                                                                  |
| ११८. इकृष्यादिभ्यः (वा. ७६१)                                      |  | ध्वादेरुलिंक् (३, ५.१०)                                                                          |
| ११९. गमेणिनिः (उ. ४४६)                                            |  |                                                                                                  |
| १२०. आडिणित् (उ. ४४७)                                             |  | भविष्यदर्थे णिनिः (३, ५.११)                                                                      |
| १२१. भुवश्च (उ. ४४८)                                              |  |                                                                                                  |
| १२२. गमेडोः (उ. २२५)                                              |  | गमेडोः (३, ५.१८)                                                                                 |
| १२३. ग्लानुदिभ्यां डौः (उ. २२२)                                   |  | ग्लानुदिभ्यां डौः (३, ५.१९)                                                                      |
| १२४. स्त्यायतेर्डट् (उ. ६०५)                                      |  | स्त्यायतेर्डट् (३, ५.२०)                                                                         |
| १२५. लक्षेर्मुट् च (उ. ४४०)                                       |  | लक्षतेरी मुट् च (३, ५.२१)                                                                        |
| १२६. सर्वधातुभ्यः ष्रन् (उ. ५९८)                                  |  | सर्वधातुभ्यस्त्रमनौ (३, ५.१३)                                                                    |
| १२७. अर्चिशुचिहुसृपिष्ठादिछर्दिभ्य इसिः (उ. २६५)                  |  | अर्चिरुचिशुचिहुसृपिष्ठादिछृदिभ्य इस्<br>(३, ५.३०)                                                |
| १२८. इस्मन्त्रन्क्विषु च (६, ४.९४)                                |  | छादेरिस्मन्त्रघञ् क्त्रिप्सु ह्रस्वः<br>(३, ५.३१)                                                |
| १२९. अतिपृवपियजितनिधनितपिभ्यो नित् (उ. २७४)                       |  | धनार्तिचक्षिङ्पृवपित्रपिजनिर्याजभ्य उस्<br>(३, ५.३२)                                             |
| १३०. अवितृस्तृतन्त्रिभ्य ईः (उ. ४३८)                              |  | अव तृ स्तृञ् तन्त्रिकण्ठभ्य इः<br>(३, ५.३३)                                                      |
| १३१. केलिम् उपसंख्यानम् (वा ३४७)                                  |  | सौकर्ये केलिमः (३, ५.३४)                                                                         |
| १३२. तुमुण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् (३, ३.१०)                |  | तुम् तदर्थायाम् भविष्यति (३, ६.१)                                                                |
| १३३. कालसमयवेलासु तुमुन् (३, ३.१६७)                               |  | कालसमयवेलासु तुमुन् (३, ६.३)                                                                     |

|                                                       |                                       |
|-------------------------------------------------------|---------------------------------------|
| १३४. तुमुन्बुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् (३, ३.१०)    | तुमर्थे वुण् (३, ६.२)                 |
| १३५. भाववचनाच्च (३, ३.११०)                            | घञ् भावे (३, ६.४)                     |
| १३६. चजोः कुः घिण्यतोः (७, ३.५२)                      | चजोः कगौ घिति (३, ४.२२)               |
| १३७. अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् (३, ३.१९)             | संज्ञायामकर्तरि च (३, ६.६)            |
| १३८. घञि च भावकारणयोः (६, ४.२९)                       | रञ्जेघञि (३, ६.५)                     |
| १३९. एरच् (३, ३.५६)                                   | स्वरादः (३, ६.७)                      |
| १४०. व्यजजपोऽनुपसर्गे (३, ३.६१)                       | मदाभः (३, ६.८)                        |
| १४१. स्वनहसोर्वा (३, ३.६२)                            |                                       |
| १४२. यमः समुपनिविषु च (३, ३.६३)                       |                                       |
| १४३. नौगदनदपठस्वनः (३, ३.६४)                          |                                       |
| १४४. कृष्णे विणायां च (३, ३.६५)                       |                                       |
| १४५. नित्यं पणः परिमाणे (३, ३.६६)                     |                                       |
| १४६. मूर्तो घनः (३, ३.७७)                             | मूर्तो घनः (३, ६.१०)                  |
| १४७. हनश्च वधः (३, ३.७६)                              | हनो वधः (३, ६.११)                     |
| १४८. द्वितोऽथुच् (३, ३.८९)                            | द्विचोऽथुः (३, ६.१२)                  |
| १४९. यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षौनङ् (३, ३.९०)             | नट्की (३, ६.१४)                       |
| १५०. स्थपो नन् (३, ३.९१.)                             |                                       |
| १५१. द्वितः क्त्रिः (३, ३.८८)                         | द्वितस्त्रिमक् (३, ६.१३)              |
| १५२. यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षौनङ् (३, ३.९०)             | यजयाचयत् विच्छप्रच्छसवपोनङ् (३, ६.१५) |
| १५३. स्वपेनन् (३, ३.९१)                               |                                       |
| १५४. यजयाचयत् विच्छप्रच्छरक्षौनङ् (३, ३.९०)           | छः श्ने (३, ६.९६)                     |
| १५५. उपसर्गे घोः किः (३, ३.९२)                        | उपसर्गकर्माधारेषु दाघोः किः (३, ६.१७) |
| १५६. कर्मण्यधिकरणे च (३, ३.९३)                        |                                       |
| १५७. अनद्यतने लुट् (३, ३.१५)                          | भावे युट् (३, ६.१९)                   |
| १५८. उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्व (८, ४.६९)              | उदः स्थास्तम्भोः सलोपश्च (३, ६.२०)    |
| १५९. कारणाकारणयोश्च (३, ३.१२६)                        | साधनाधारयोर्युट् (३, ६.२१)            |
| १६०. ईषददुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् (३, ३.१२६) | इषद दुःसुषु खल्यु (३, ६.२२)           |
| १६१. तव्यतव्यानीयरः (३, १.९६)                         | तव्यानीयो (३, ७.१)                    |
| १६२. अचो यत् (३, १.९७)                                | स्वराद्यः (३, ७.२)                    |

|                                                      |                                       |
|------------------------------------------------------|---------------------------------------|
| १६३. क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे (६, १.८१)                 | क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे (३, ७.४)        |
| १६४. पोरुपधात् (३, १.९८)                             | पुशकात् (३, ७.६)                      |
| १६५. ईद्यतिः (६, ४.६५)                               | इच्चातः (३, ७.५)                      |
| १६६. ऋहलोर्ण्यत् (३, १.१२४)                          | ऋहसात् घ्यण् (३, ७.८)                 |
| १६७. यजयाचरुचप्रवचर्चश्च (७, ३.६६)                   | नध्यणियज्याच्वचर्चप्रवचर्चत्यज्       |
| १६८. वचोऽशब्द संज्ञायाम् (७, ३.६७)                   | पूजगर्जभुजाम् (३, ७.१०)               |
| १६९. ओरावश्यके (३, १.१२५)                            | ओरावश्यके दयण् (३, ७.११)              |
|                                                      | ओदौतोर्यः स्वरवत् (३, ७.१२)           |
| १७०. ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः (३, १.११०)                | ऋदुपधात् क्यप् (३, ७.१३)              |
| १७१. ई च खनः (३, १.१११)                              | हस्वाच्च क्यप् (३, ७.१६)              |
| १७२. भुवो भावे (३, १.१०७)                            | भुवो भावे क्यप् (३, ७.२२)             |
| १७३. भिद्योद्धयौ नदे (३, १.११५)                      | भिद्योद्धयौ नदे (३, ७.२५)             |
| १७४. विभाषा कृवृष्योः (३, १.१२०)                     | कृवृष्यो वा (३, ७.२६)                 |
| १७५. अर्हः (३, २.१२)                                 | अर्हविधौ च (३, ७.२७)                  |
| १७६. पुरोऽग्रतोऽग्रेषु, सर्तेः (३, २.१८)             | सान्ताच्च (३, ७.२८)                   |
| १७७. स्त्रियां क्तिन् (३, ३.९४)                      | स्त्रियाम् (३, ८.१)                   |
| १७८. व्रजयजोर्भावे क्यप् (३, ३.९८)                   | यजां भावे क्यप् (३, ८.२)              |
| १७९. कृञः श च (३, ३.१००)                             | भावे क्तिः (३, ८.८)                   |
| १८०. स्त्रियां क्तिन् (३, ३.९४)                      | कर्तरिक्तिश्च संज्ञायाम् (३, ८.१५)    |
| १८१. षिद्भिदादिभ्योऽङ् (३, ३.१०४)                    | षिद्भिदामङ् (३, ८.१६)                 |
| १८२. आतश्चोपसर्गे (३, ३.१०६)                         | गुरोर्हसात् (३, ८.१९)                 |
| १८३. अप्रत्ययात् (३, ३.१०२)                          | प्रत्ययान्तात् (३, ८.२१)              |
| १८४. ण्यासश्रन्थो युच् (३, ३.१०७)                    | न्यन्तास्ग्रन्थार्थश्रन्थघट्विद्ङ-    |
| १८५. घट्टिवन्दिविदिभ्यश्चेति वाच्यम् (वा. ७५१)       | षिभ्यो थुः (३, ८.२३)                  |
| १८६. इषेरनिच्छार्थस्य (वा. ७५२)                      |                                       |
| १८७. इक्शिपौ धातुनिर्देशे (वा. ७५५)                  | इक्शितपौ धातुनिर्देशे (३, ८.२२)       |
| १८८. समानकर्तृकयोः पूर्वकाले (३, ४.२१)               | पूर्वकाले क्त्वा (३, १०.१)            |
| १८९. नक्त्वा सेट् (१, २.१८)                          | नक्त्वा सेट् (३, १०.२)                |
| १९०. अलङ्गल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा (३, ४.१८) | अलङ्गल्वोः प्रतिषेधे क्त्वा (३, १०.६) |



|                                                         |                                       |
|---------------------------------------------------------|---------------------------------------|
| १९१. उदितो वा (७, २.५६)                                 | उदितो वा (३, १०.७)                    |
| १९२. समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् (७, १.३७)             | समासे क्यप् (३, १०.८)                 |
| १९३. ल्यपि लघुपूर्वात् (६, ४.५६)                        | क्यपिञेर्गुणश्च (३, १०.९)             |
| १९४. समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् (७, १.३७)             | तत्कालेऽपि (३, १०.९३)                 |
| १९५. आभीक्ष्णे णमुल्च (३, ४.२२)                         | पौनःपुन्ये णम् पदं द्विश्च (३, १०.१४) |
| १९६. अन्यथैवङ्कथमित्थंसुसिद्धाप्रयोगश्चेत्<br>(३, ४.२७) | कथमादिषु स्वार्थे कृञः (३, १०.१५)     |
| १९७. वर्णात्कारः (वा ७५६)                               | वर्णात्कारः (३, १०.१७)                |
| १९८. रादिफः (वा ७५७)                                    | रादिफो वा (३, १०.१८)                  |